ध्वनियों का वर्गीकरण

डॉ. दीप्ति धीर,
सहायक प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग ।

ध्वनियों का वर्गीकरण

ध्वनि – किसी भी वस्तु से किसी भी तरह का कुछ ऐसा हो जो सुना जा सके उसे 'ध्वनि' कहते है ।

ध्वनि का वर्गीकरण दो रूपों में मिलता है –

(क) स्वर

(ख) व्यंजन

(क) स्वर – स्वर उन ध्वनियों को कहते हैं जो स्वयं उच्चरित होती हैं । इनके उच्चारण में हवा अबाध गति से मुख-विवर से बाहर निकल जाती है ।

(ख) व्यंजन – व्यंजन उन ध्वनियों को कहते है जो स्वर की सहायता से उच्चरित होती है । इनके उच्चारण में हवा अबाध गति से नहीं निकल पाती ।

(क) स्वरों का वर्गीकरण

स्वरों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है ।

१ स्थान के आधार पर

२ प्रयत्न के आधार पर

१ स्थान के आधार पर – स्थान के आधार पर स्वरों के नौ भेद होते है -

1. कण्ठ्य – इसका उच्चारण कण्ठ से होता है ।

जैसे - अ , अः

2. तालव्य – इसका उच्चारण तालु से होता है ।

जैसे – इ ।

3. मूर्धन्य – इस स्वर का उच्चारण मूर्धा से होता है ।

जैसे – ऋ ।

4. दन्त्य – इस स्वर का उच्चारण दंत की सहायता से होता है ।

जैसे – ऌ ।

5. ओष्ठय – इसका उच्चारण ओष्ठ से होता है ।

जैसे – उ ।

6. अनुनासिक – इसका उच्चारण नासिका से होता है ।

जैसे – अं ।

7. कण्ठ्यतालव्य – इसका उच्चारण कण्ठ और तालु से एक साथ होता है ।

जैसे – ए , ऐ ।

8. कण्ठ्योष्ठ्य – इसका उच्चारण कण्ठ और ओष्ठों से एक साथ होता है ।

जैसे – ओ , औ ।

9. दन्त्योष्ठ्य – इसका उच्चारण दन्त और ओष्ठ् से एक साथ होता है ।

जैसे – व ।

२. प्रयत्न के आधार पर – प्रयत्न के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण तीन प्रकार से किया जाता है –

१ जिह्वा की अवस्था
२ ओष्ठों की अवस्था
३ मांसपेशियों की अवस्था

१. जिह्वा की दो अवस्थाएँ है –

अ. जिह्वा की आड़ी स्थिति

१. अग्र स्वर – इ,ई,ए,ऐ ।

२ पश्च स्वर – उ, ऊ ।

३. मध्य स्वर - अ, आ ।

आ. जिह्वा की पड़ी स्थिति

१. संवृत – ऊपर में ऊ शब्द ।

२. ईषत् संवृत –अनेक में ए ।

३. विवृत – आम में आ शब्द ।

४. ईषत् संवृत –बोतल में ओ।

२. ओष्ठों की अवस्था –

अ. वृत्ताकार स्वर – ऊ ।
आ. अर्द्धवृताकार स्वर – आ ।
इ. अवृताकार स्वर – इ, ई, ए, ऐ ।

३. मांसपेशियों की अवस्था –

१. दृढ़ स्वर –ई, ऊ ।
२. शिथिल स्वर –इ, उ ।

(ख) व्यंजनों का वर्गीकरण

व्यंजनों का वर्गीकरण दो आधारों पर किया जाता है ।

१ स्थान के आधार पर

२ प्रयत्न के आधार पर

१ स्थान के आधार पर – स्थान के आधार पर व्यंजनों का वर्गीकरण इस प्रकार है :-

१. स्थान के आधार पर – स्थान के आधार पर व्यंजनों के आठ भेद होते है -

1. काकल्य – इसका उच्चारण काकल स्थान से होता है ।

जैसे – ह ।

2. कण्ठ्य – इसका उच्चारण कण्ठ से होता है ।

जैसे – क ,ख , ग , घ ।

3. तालव्य – इसका उच्चारण तालु से होता है ।

जैसे – च , छ , ज , झ, य , श ।

4. मूर्धन्य – इसका उच्चारण मूर्धा से होता है ।

जैसे – ट , ठ , ड, ढ, र, ष ।

5. दन्त्य – इसका उच्चारण दंत से होता है ।

जैसे – त, थ, द, ध, ल, स ।

6. ओष्ठ्य – इसका उच्चारण ओष्ठों से होता है ।

जैसे – प, फ , ब, भ, म ।

7. दन्त्योष्ठ्य – इसका उच्चारण दन्त एवं ओष्ठ दोनों से होता है ।

जैसे – फ, ब ।

8. जिह्वामूलीय – इसका उच्चारण जिह्वा के मूल से होता है ।

जैसे – क, ख, ग ।

२. प्रयत्न के आधार पर – प्रयत्न के मुख्यतया दो भेद होते हैं -

1. आंतरिक प्रयत्न
2. बाहरी प्रयत्न

1. आंतरिक प्रयत्न – इसके आधार पर व्यंजनों के आठ भेद होते है -

१. स्पर्श – इसके उच्चारण में अवयवों का पूर्णतया स्पर्श होता है ।

उदाहरण – कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, पवर्ग ।

२. स्पर्श-संघर्षी – इसके उच्चारण में स्पर्श के साथ साथ निःश्वास के निकलने में हल्का- सा संघर्षण भी होता है ।

जैसे – च, छ, ज, झ ।

३. संघर्षी – इसके उच्चारण में वायु रगड़ खाकर बाहर निकलती है ।

जैसे – स, श, ष, ज ।

४. पार्श्विक – इसके उच्चारण में जिह्वा की नोक मुर्धा का स्पर्श करती है ।

जैसे – ल ।

५. लुंठित – इसके उच्चारण में जिह्वा बेलन की तरह लपेट खा कर तालु का स्पर्श करती है ।

जैसे – र

६. उत्क्षिप्त – इसके उच्चारण में जिह्वा तालु के किसी भाग को स्पर्श करके झटके से छूकर हट जाती है ।

जैसे - ड़

७. अर्धस्वर – ऐसे व्यंजन कभी स्वर की तरह और कभी व्यंजन की तरह बोले जाए है ।

जैसे – य, व ।

८. अनुनासिक – इसके उच्चारण में निःश्वास- वायु मुख-विवर के साथ-साथ नासिका-विवर से भी निकला करती है ।

जैसे –ङ , ञ, ण, न

2. बाहरी प्रयत्न - इसके आधार पर व्यंजनों के आठ भेद है -

१. विवर – इसके उच्चारण में स्वर- तन्त्रियां पूर्णतया खुली रहती है ।

जैसे – क, प ,च, ट, त ।

२. संवार – इसके उच्चारण में स्वर – तन्त्रियां बंद हो जाती है ।

जैसे – ग, ब, ज, ड, द ।

३. श्वास – इसके उच्चारण में श्वास-प्रश्वास की क्रिया अबाध रूप से चलती है ।

जैसे – छ, फ, उ ।

४. नाद – इसके उच्चारण में स्वर-तन्त्रियां के अंतर्गत कम्पन होता है।

जैसे - म , ण, न ।

५. अघोष – इनके उच्चारण में स्वर तंन्त्रियों में कम्पन नहि होता ।
इसमें प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा व्यंजन आता है ।

जैसे – क, ख, च, छ, ट, ठ, त,थ, प,फ ।

६. घोष – इसके उच्चारण में स्वर-तंन्त्रियों में कम्पन होता है । प्रत्येक वर्ग का तीसरा , चौथा और पाँचवा व्यंजन इसमें आता है ।

जैसे – ग,घ,ङ,ज,झ,ण आदि ।

७. अल्पप्राण – इसके उच्चारण में वायु काम निकलती है । प्रत्येक वर्ग का पहला , तीसरा और पाँचवा व्यंजन इसमें आता है ।

जैसे – क, ग, ङ आदि ।

८. महाप्राण – इसके उच्चारण में अधिक वायु निकलती है । प्रत्येक वर्ग का दूसरा और चौथा वर्ण इसमें आता है ।

जैसे – ख, घ, छ, झ आदि ।

निष्कर्ष – ध्वनियों का वर्गीकरण दो रूपों स्वर और व्यंजन में किया गया है । स्वर और व्यंजन ध्वनियों के ज्ञान द्वारा ही हिंदी भाषा का शुद्ध उच्चारण किया जा सकता है ।